नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

ट्रंप का टैरिफ : आर्थिक संबंधों को चुनौती

1 अगस्त से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत पर 25 फीसदी टैरिफ और अतिरिक्त जुर्माने की घोषणा वैश्विक व्यापार-नीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ है. यह निर्णय न केवल भारत-अमेरिका आर्थिक संबंधों को चुनौती देता है, बल्कि एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में भारत की रणनीतिक स्वायत्तता पर भी सीधा प्रहार करता है. इस फैसले को ट्रंप की नीति का मूल 'अमेरिका फर्स्ट' के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए, जहां स्वदेशी उद्योगों की रक्षा के नाम पर संरक्षणवाद को प्राथमिकता दी जाती रही है.

भारत पर लगाए गए 25 फीसदी टैरिफ और रूस से सैन्य एवं ऊर्जा व्यापार पर लगाए गए जुर्माने केवल व्यापारिक नाराजगी नहीं हैं, ये एक रणनीतिक दबाव की भू-भौगोलिक अभिव्यक्ति हैं. ट्रंप ने यह आरोप लगाया कि भारत की टैरिफ संरचना विश्व में सबसे ऊंची है और उसमें 'गैर-मौद्रिक व्यापार बाधाएं' भी विद्यमान हैं. दरअसल, यह तर्क अमेरिकी घरेलू औद्योगिक लॉबी को संतुष्ट करने का एक प्रयास भी है, खासकर चुनावी वर्ष की पृष्ठभूमि में, जब अमेरिकी मतदाता नौकरियों और घरेलू उत्पादन के मुद्दों को प्राथमिकता देते हैं. भारत सरकार की प्रारंभिक प्रतिक्रिया संतुलन और संयम की परिचायक रही है. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा की प्रतिबद्धता दोहराई है, बल्कि यह भी स्पष्ट किया है कि भारत संवाद और परस्पर सम्मान के सिद्धांतों पर आधारित द्विपक्षीय समझौते के लिए प्रतिबद्ध है. यह दृष्टिकोण रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत उचित है, क्योंकि भारत की निर्यात संरचना अमेरिकी बाजारों पर काफी हद तक निर्भर करती है, विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटो कंपोनेंट्स, इस्पात, गहने और समुद्री उत्पादों के संदर्भ में. यह ध्यान रखना होगा कि भारत-रूस रक्षा और ऊर्जा संबंध दशकों पुराने हैं और एक व्यापक रणनीतिक स्वायत्तता की नींव पर आधारित हैं.

अमेरिका के लिए यह स्वीकार करना कठिन हो सकता है कि भारत, यूक्रेन संघर्ष के बावजूद, रूस के साथ संतुलित व्यवहार बनाए रखे. किंतु भारत की विदेश नीति का मूलभूत सिद्धांत 'स्वायत्त रणनीतिक साझेदारी' रहा है, जो किसी एक ध्रुवीय दबाव के आगे झुकना स्वीकार नहीं करता. इस संदर्भ में ट्रंप का निर्णय भारत को रूस से दूर करने का एक आर्थिक हथियार हो सकता है, किंतु यह दबाव भारत जैसे उभरते हुए लोकतंत्र पर दीर्घकालिक रूप से प्रभावी नहीं होगा. इसके विपरीत, यह अमेरिका की 'विश्वसनीय साझेदार' की छवि को धूमिल कर सकता है. सकारात्मक पक्ष यह है कि 1 अगस्त से प्रभावी टैरिफ स्थायी नहीं, बल्कि अस्थायी स्वरूप के हैं और अगस्त के अंत में भारत में प्रस्तावित अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल की यात्रा इस दिशा में संवाद के द्वार खोल सकती है. ट्रंप प्रशासन को यह समझना होगा कि भारत न तो चीन है, जिसे केवल निर्यात-आधारित अर्थव्यवस्था के तौर पर देखा जाए, और न ही वह रणनीतिक दृष्टि से इतना लचीला है कि अपनी नीति अचानक बदले. भारत के साथ आर्थिक सहयोग को प्रतिस्पर्धा नहीं, साझेदारी के रूप में देखना होगा.

डोनाल्ड ट्रंप का यह निर्णय अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिए उठाया गया प्रतीत होता है, किंतु इसके दीर्घकालिक भू-राजनीतिक और भू-आर्थिक परिणाम हो सकते हैं. भारत को इस संकट को अवसर में बदलने की आवश्यकता है— एक ओर आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ते हुए, दूसरी ओर वैश्विक सहयोग की संभावनाओं को बनाए रखते हुए. भारत और अमेरिका के संबंध केवल व्यापार तक सीमित नहीं हैं; वे लोकतांत्रिक मूल्यों, तकनीकी नवाचार और वैश्विक स्थिरता के साझा उद्देश्य से भी जुड़े हैं. यदि इन मूल्यों को प्राथमिकता दी जाए, तो यह अस्थायी व्यापारिक असहमति, भविष्य में एक नए और अधिक परिपक्व संबंध की ओर अग्रसर हो सकती है.

अब दोहा में सामाजिक विकास के लिए विमर्श यज्ञ

नीलमेघ चतुर्वेदी

विश्व संस्था संयुक्त राष्ट्र द्वारा वैसे तो संसार की समस्याओं के समाधान के लिए कई जमावड़े होते हैं. इसी क्रम में 6 से 12 मार्च 1995 तक डेनमार्क की राजधानी कोपनहेगन में आयोजित प्रथम विश्व सामाजिक विकास सम्मेलन ने कीर्तिमान स्थापित किया. उस समयावधि में विश्व भर से 14 हजार से अधिक सहभागी चिंतन यज्ञ के साक्षी बने. तीन दशक बाद फिर द्वितीय विश्व सामाजिक विकास सम्मेलन की आवश्यकता अनुभव की गई. इस बार कतर मेजबान देश है. इसकी राजधानी दोहा में वर्ष के अंत में 4 से 6 नवंबर को यह सम्मेलन होगा.

कोपनहेगन सम्मेलन के बाद दुनिया की समस्याओं और चुनौतियों की स्थिति इतनी बदली कि फिर विमर्श की आवश्यकता अनुभव हुई है. कोपनहेगन में प्रथम सम्मेलन आयोजन के तीन प्रमुख उद्देश्यों की पहचान हुई थी. ये थे, गरीबी उन्मूलन, उत्पादक रोजगार सृजन तथा समावेशी सामाजिक विकास व्यवस्था को बढ़ावा देना. सम्मेलन के समापन पूर्व कोपनहेगन घोषणा पत्र भी जारी किया गया. विश्व के 116 देशों के राष्ट्राध्यक्षों और सरकारों के प्रतिनिधियो ने महत्वपूर्ण दस्तावेज द्वारा समस्या समाधान के लिए वैश्विक प्रतिबद्धता व्यक्त की. यह दस्तावेज लोक केंद्रित रहा. दस्तावेज 10 बिंदुओं का संकल्प लिया गया. इनका उद्देश्य एक ऐसी विश्व स्तरीय सामाजिक नीति का निर्माण था जो सभी को आगे बढ़ाए. कोई भी पीछे ना रहे. कोपनहेगन घोषणा पत्र की नींव पर ही दोहा चिंतन यज्ञ, घोषणा पत्र का निर्माण और उद्घोषणा होगी.

कोपनहेगन घोषणा पत्र में लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अनुकूल माहौल विकास, गरीबी उन्मूलन, पूर्ण रोजगार उपलब्धता, सामाजिक एकीकरण की गति तेज करना, लैंगिक समानता की प्राप्ति, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल, अत्यल्प विकसित देशों और दक्षिण अफ्रीका में विकास गति को तेज करना, सामाजिक विकास और संरचनागत लक्ष्यों का एकीकरण, समायोजन प्रगति, सामाजिक विकास के लिए पर्याप्त सहयोग, वृद्धि तथा व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण जैसे संकल्प

सम्मिलित थे.

दोहा में नवंबर में होने वाले सम्मेलन की प्रारूप कार्यसूची में गरीबी उन्मूलन, पूर्ण रोजगार व्यवस्था, बेहतर कार्य दशाएं, सामाजिक समावेशन और कोई भी पीछे ना रहे जैसे बिंदुओं को सम्मिलित किया गया है. इससे असमानता की खाई को पाटने, सामाजिक विकास संबंधी वैश्विक संकल्प पूर्ण करने तथा वर्ष 2030 तक संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित टिकाऊ विकास लक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिलेगी.

कोपनहेगन घोषणापत्र के बाद क्रियान्यवयन के प्रयास होते रहे. इसी कारण घोषणा पत्र जीवंत बना रहा। बीते तीन दशक में सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों में गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य और शिक्षा को केंद्र में रखा गया. टिकाऊ विकास पर जोर दिया गया. वर्ष 2020 में सामने आया साझा एजेंडा समावेशी बहुपक्षीयवाद के नवीनीकरण पर केंद्रित रहा. अत्यधिक गरीबी की स्थिति घटने और शाला जाने वाले बच्चों विशेषकर बालिकाओं की संख्या बढ़ी. डिजीटल बदलाव के चलते सेवाओं की पहुँच व्यापक हुई। ये कोपनहेगन की उपलब्धियां हैं.

तीन दशकों में सामने आई चुनौतियों में आय, अवसर और सेवाओं की पहुँच के संदर्भ में गहरी असमानता सामने आई. डिजीटल डिवाइड के चलते अभी भी लाखों- करोड़ों लोग डिजीटलीकरण की पहुँच में नहीं है. वंचित समूह के समक्ष कठिनाईयां हैं. हालांकि भारत में वृद्धजनों और दिव्यांगों के अधिकार संरक्षण संबंधी कानून बने हैं. किंतु जलवायु बदलाव के चलते विकास मार्ग पर चुनौतियां हैं.

इधर, विश्व में असमानता में बढ़त, जनसांख्यिकी बदलाव और तेजी से प्रौद्योगिकी परिवर्तन की स्थिति सामने आ रही है. इन सभी बिंदुओं पर दोहा सम्मेलन में विमर्श की तैयारी है. दोहा में विश्व समुदाय सामाजिक विकास की रणनीतियों को परिभाषित करेंगा, ऐसी आशा की जा रही है. साथ ही वैश्विक साझेदारी के सुदृढ़ीकरण, सभी के लिए समान अवसरों की उपलब्धता के लिए समावेशी नीतियों को आगे बढ़ाए जाने की संभावना है. द्वितीय विश्व सामाजिक विकास सम्मेलन का लक्ष्य ऐसी व्यवस्था का विकास है जो अधिक समावेशी, लचीली और टिकाऊ हो.

संयुक्त राष्ट्र द्वितीय विश्व सामाजिक विकास सम्मेलन की मेजबानी कतर करेगा. कतर के अमीर तमीम बिन हमाद अल-थानी ने विश्व समुदाय को अभी से दिए स्वागत संदेश में कहा है कि सम्मेलन बीते सम्मेलन समापन पर लिए संकल्पों की प्रगति की पहचान करेगा. साथ ही सामाजिक विकास प्रक्रिया को आगे बढ़ाने संबंधी विश्व समुदाय की सामूहिक प्रतिबद्धता को दोहराएगा. यह सुनिश्चित होगा कि कोई भी पीछे ना रहे। कतर लोक केंद्रित विकास के प्रति लगातार जागरूक है. कतर शिक्षा, स्वास्थ्य में निवेश, सामाजिक संरक्षण और सभी के लिए उत्पादक रोजगार, समावेशी व्यवस्था की ओर तेजी से अग्रसर है. कतर ने लोक केंद्रित व्यवस्था को लक्षित कर समाजार्थिक और पर्यावरणीय नीतियों में तालमेल बिठाया है. इस प्रक्रिया में सरकार और समाज दोनों की पहल साथ-साथ है. दोहा में सम्मेलन आयोजन बहुपक्षीयवाद और वैश्विक एकता में कतर के विश्वास को प्रदर्शित करता है. लंबे समय से संयुक्त राष्ट्र का सहयोगी होने के नाते कतर ने सामाजिक न्याय और टिकाऊ विकास का सदैव समर्थन किया है.

इधर विश्व समुदाय को अपेक्षा है कि सम्मेलन विमर्श, सहयोग तथा साझा समाधान का प्रमुख मंच बनेगा. इसके पर्याप्त आधार है. विश्व में असमानता तेजी से बढ़ी है। जनसांख्यिकी बदलावों में तेजी आई है. इसलिए विश्व समुदाय को नए संकल्प लेने की जरूरत है.

लेखक - भारत सरकार के शिक्षामंत्री

समावेशी शिक्षा व्यापक स्तर पर साकार

धर्मेन्द्र प्रधान

2020 में भारत ने केवल एक नई नीति नहीं अपनाई, बल्कि एक प्राचीन आदर्श को फिर से जीवंत किया. राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने सीखने को राष्ट्र निर्माण का आधार बनाया और इसे हमारी सभ्यतागत परंपराओं से जोड़ा. स्वर्गीय डॉ. के कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में तैयार की गई यह नीति इतिहास की सबसे व्यापक जन-सहभागिता वाली नीति-निर्माण प्रक्रिया में से एक थी. यह एक ऐसा दूरदर्शी रूपरेखा थी जो सांस्कृतिक मूल्यों में निहित था. यह एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की कल्पना थी जो रटने की प्रवृत्ति, कठोर ढाँचों और भाषाई ऊँच-नीच से परे हो समावेशी, सर्वांगीण और भविष्य के लिए तैयार.

पाँच वर्षों में एनईपी का असर केवल नीतियों तक नहीं, बल्कि कक्षाओं तक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है. अब प्राथमिक कक्षाओं में खेल आधारित शिक्षण, रटने की पद्धति की जगह ले चुका है; बच्चे अपनी मातृभाषा में सहजता से पढ़ रहे हैं; छठी कक्षा के विद्यार्थी व्यावसायिक प्रयोगशालाओं में हाथों-हाथ कौशल सीख रहे हैं. अनुसंधान संस्थानों में भारत का पारंपरिक ज्ञान आधुनिक विज्ञान के साथ संवाद कर रहा है. एनईपी की सोच क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और वैश्विक मंचों पर भारतीय संस्थानों की उपस्थिति में भी झलकती है.

निपुण भारत मिशन ने बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को कक्षा 2 तक सुनिश्चित किया है. एएसईआर 2024 और परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण 2024 जैसी रिपोर्टों में यह प्रगति परिलक्षित होती है आज की कक्षाएं जिज्ञासा और समझ का केंद्र बन चुकी हैं. विद्या प्रवेश और बालवाटिका जैसी पहलें अब प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा को व्यवस्थित रूप से एकीकृत कर रही हैं. 22 भारतीय भाषाओं में जादुई पिटारा और ई-जादुई पिटारा, नई पीढ़ी की पाठ्यपुस्तकों के साथ, शिक्षा को रुचिकर बना रहे हैं. निष्ठा प्रशिक्षण के माध्यम से 14 लाख से अधिक शिक्षक प्रशिक्षित हो चुके हैं और दिक्षा जैसे प्लेटफॉर्म शिक्षण सामग्री को देशभर में सुलभ बना रहे हैं.

एनईपी ने यह स्पष्ट किया कि भाषा कोई बाधा नहीं, बल्कि सशक्तिकरण का माध्यम है. 117 भाषाओं में प्राइमर विकसित किए गए हैं और भारतीय सांकेतिक भाषा को एक विषय के रूप में शामिल किया गया है. भारतीय भाषा पुस्तक योजना और राष्ट्रीय डिजिटल भंडार जैसी योजनाएं भाषाई और सांस्कृतिक ज्ञान को लोकतांत्रिक बना रही हैं.

नेशनल सर्कुलम फ्रेमवर्क और कक्षा 1 से 8 की नई किताबें अब जारी हो चुकी हैं. प्रेरणा एक सेतु कार्यक्रम है जो छात्रों को नई पाठ्यचर्या में सहजता से ढालने के लिए मार्गदर्शन करता है, ताकि वे अभिभूत न हों, बल्कि हर चरण में सहयोग प्राप्त करें. समग्र शिक्षा और पीएम पोषण जैसी योजनाओं ने लगभग सार्वभौमिक नामांकन को संभव बनाया है. एनईपी का प्रभाव वंचित समूहों तक भी पहुँचा है. 5,138 से अधिक कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में 7.12 लाख से अधिक वंचित समुदायों की बालिकाएं नामांकित हैं. धर्ती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत 692 और पीवीटीजी छात्रों के लिए 490 से अधिक छात्रावास स्वीकृत किए गए हैं. प्रशस्त कार्यक्रम के माध्यम से दिव्यांगता की पहचान कर शिक्षा व्यवस्था को और अधिक समावेशी व सशक्त बनाया गया है.

एनईपी 2020 के परिवर्तन का एक प्रमुख स्तंभ हैं 14,500 पीएम-श्री स्कूल, जो आधुनिक, समावेशी और पर्यावरण के अनुकूल हैं. ये विद्यालय एनईपी के विजन के अनुरूप आदर्श मॉडल स्कूल बन रहे हैं, जो बुनियादी ढाँचे और शिक्षण पद्धति दोनों को पुनर्परिभाषित कर रहे हैं. विद्यांजलि प्लेटफॉर्म ने 8.2 लाख स्कूलों को 5.3 लाख से अधिक वॉलंटियर और 2,000 सीएसआर पार्टनर्स से जोड़ा है, जिससे 1.7 करोड़ छात्रों को सीधा लाभ मिला है. परिवर्तन की इस यात्रा का उत्सव अखिल भारतीय शिक्षा समागम के माध्यम से मनाया जा रहा है, लेकिन इसका मूल्यांकन शिक्षार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों के शांत आत्मविश्वास में हो रहा है.

उच्च शिक्षा में कुल नामांकन 3.42 करोड़ से बढ़कर 4.46 करोड़ हो गया है 30.5 की बढ़ोत्तरी. इनमें लगभग 48 प्रतिशत छात्राएं हैं. महिला पीएचडी नामांकन 0.48 लाख से बढ़कर 1.12 लाख हो गया है. एसी,एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक छात्रों का बढ़ता नामांकन उच्च शिक्षा में समावेशिता का ऐतिहासिक संकेत है. महिला जीईआर लगातार छह वर्षों से पुरुषों से अधिक रहा है. मल्टीपल एंट्री-एग्जिट, एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स, नेशनल सर्कुलम फ्रेमवर्क और जैसे नवाचारों ने शिक्षा को विकल्पों से भरपूर और छात्र-केंद्रित बनाया है. 21.12 करोड़ आपार आईडी उपलब्ध कराई गई हैं. 153 विश्वविद्यालयों में मल्टीपल एंट्री और 74 में एग्जिट विकल्प उपलब्ध हैंअब सीखना क्रमबद्ध नहीं, बल्कि मॉड्यूलर है. एनईपी के अनुसंधान और नवाचार पर ज़ोर ने भारत के वैश्विक नवाचार सूचकांक को 81वें स्थान से 39वें तक पहुंचाया है. 400 से अधिक उच्च शिक्षा संस्थानों में 18,000 से अधिक स्टार्टअप इनक्यूबेट किए गए हैं. अनुसंधान एनआरएफ, पीआरएमएफ 2.0, और 6,000 करोड़ की वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन योजना शोध को विकेंद्रीकृत और सुलभ बना रही हैं. स्वयं और स्वयं डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर 5.3 करोड़ से अधिक नामांकन हो चुके हैं. दिक्षा और पीएम ई-विद्या के 200 डीटीएच चैनलों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण सामग्री देश के हर कोने में उपलब्ध हो रही है. द्विवार्षिक प्रवेश, डुअल डिग्री जैसी व्यवस्थाएं उच्च शिक्षा को और अधिक समावेशी, बहुविषयक और उद्योगोन्मुखी बना रही हैं. क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में भारत के 54 संस्थान शामिल हुए हैं, जबकि 2014 में केवल 11 थे. डीकिन, और साउथेम्पटन जैसे वैश्विक विश्वविद्यालय भारत में कैंपस स्थापित कर रहे हैं.

दुनिया को झकझोरने वाला भयंकर भूकंप

रूस के तटवर्ती इलाके कामचटका प्रायद्वीप में 8.8 तीव्रता का भयंकर भूकंप आया है, जिसका केंद्र जमीन से 19.3 किलोमीटर की गहराई पर था. भूकंप के आते ही 4 मीटर ऊंची सूनामी आयी, जिससे यहां के तटवर्ती इलाके की कई इमारतों को जबर्दस्त नुकसान पहुंचा है. भूकंप के तुरंत बाद जापान में 16 जगहों पर सूनामी देखी गई और अमेरिका के कैलिफोर्निया तथा हवाई द्वीपों में हड़कंप की स्थिति मच गई. अमेरिका के हवाई द्वीप में 6 फीट ऊंची लहरें देखी गईं और जापान के 19 लाख लोगों पर भी इस भयावह भूकंप से विस्थापन का खतरा बढ़ गया है. रूस के साथ-साथ जापान और अमेरिका के कैलिफोर्निया तट पर इस भूकंप की तीव्रता का पता चलते ही सूनामी अलर्ट जारी किया गया. रूस के कुरिल आईलैंड में 2700 लोगों को तुरंत सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया. जापान में 16 से ज्यादा जगहों पर 40 सेंटीमीटर ऊंची लहरें, जो प्रशांत के साथ दक्षिण दिशा की ओर बढ़ रही हैं, तुरंत देखी गई. जापान के कई समुद्र तटों पर व्हेल मछलियां बहकर आने लगीं. अमेरिका के होनोलूलू में भी तुरंत इसका असर दिखने लगा.

प्रशासन ने समुद्र तट से लोगों को तुरंत बाहर जाने की चेतावनियां जारी कर दी. जिस कारण भारी ट्रैफिक जाम की स्थिति बन गई. जापान में इस भयावह भूकंप के बाद फुकीसीमा न्यूक्लीयर प्लांट को तुरंत खाली कराया गया. सवाल है क्या यह भूकंप किसी तात्कालिक मानवीय गलती से आया है, जैसे कोई परमाणु परीक्षण या ग्लोबलवार्मिंग? हालांकि ग्लोबलवार्मिंग सीधे तौर पर भूकंप का कारण नहीं बनती, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से यह इसकी वजह बनती है. क्योंकि ग्लोबलवार्मिंग के कारण जब बड़े पैमाने पर ग्लेशियर पिघलते हैं, जैसे हाल के वर्षों में आर्कटिक और दूसरे बर्फीले क्षेत्रों में पिघले हैं, तो वहां की जमीन पर दबाव कम हो जाता है, जिससे आइसोटेटिक रिबाउंड होता है और यह भूगर्भीय प्लेटों में तनाव को बदल सकता है, जिससे यह भूकंप को ट्रिगर कर सकता है. ग्लोबलवार्मिंग से समुद्र का जलस्तर बढ़ जाता है. समुद्र में पानी का वजन बढ़ने से भी महासागर की प्लेटों पर अतिरिक्त दबाव बनता है, जिस कारण सबडक्शन जोन (जैसे कामचटका) में तनाव असंतुलन बढ़ सकता है.

- वीना गौतम

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

सोने की चिड़िया नहीं, सिंह बने भारत संघ प्रमुख भागवत की यही चाहत

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत ने एक नई बात कही है जिस पर गौर किया जा सकता है. उन्होंने कहा कि भारत को सोने की चिड़िया नहीं, सिंह बनना चाहिए. इस संबंध में आपकी क्या राय है?

हमने कहा, चिड़िया चहचहाती है जबकि सिंह दहाड़ता है. जब यूरोप के लोग कंगाल थे तब भारत की इकोनॉमी विश्व की कुल अर्थव्यवस्था की 23 प्रतिशत थी. उसे विदेशी गोल्डन बर्ड या सोने की चिड़िया मानकर यहां आते थे ताकि यहां के धन की लूटखसोट कर सकें. हूण, शक, तातार, मंगोल, मुगल, ब्रिटिश, फ्रेंच, डच सभी इसी इरादे से भारत आएं. विदेशी हमलावरों में चंगेज खान और नादिरशाह जैसे लुटेरे थे. सिकंदर भी विश्वविजय का सपना लेकर भारत आया था जिसका पोरस से मुकाबला हुआ था. देश में 600 साल मुगलों और 200 वर्ष से ज्यादा अंग्रेजों ने राज किया. अंग्रेज हमारा कोहिनूर हीरा अपने साथ ले गए. लॉर्ड क्लाइव सबसे बड़ा चोर था जो सिराजुद्दौला की

कीमती पालकी और टीपू सुलतान के ठोस सोने से बने बाघ के मुखवाले रत्नों से जड़े सिंहासन का हिस्सा अपने साथ ले गया. चिड़ीमार लोग चिड़िया का शिकार करते हैं या उसे पिंजरे में कैद कर लेते हैं इसलिए भागवत की बात में दम है कि हमारा देश सिंह या बब्बर शेर बन जाए.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, इसकी फिक्र मत कीजिए. अपने यहां गुजरात के गिर अभयारण्य में सिंहों की बड़ी तादाद हैं. कितने ही लोग अपने नाम के साथ सिंह लगाते हैं. शहरों में लॉयन्स क्लब हैं जिनके सदस्य अपने नाम की शुरूआत में लॉयन लगाते हैं. आपने फिल्म अभिनेता अजीत का डायलाग सुना होगा- सारा शहर मुझे लॉयन के नाम से जानता है.

हमने कहा, आपको मालूम होना चाहिए कि सिंहनी शिकार मारकर लाती है और सिंह मजे से खाता है. वह स्वभाव से आलसी होता है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, आपने देखा होगा कि प्रधानमंत्री मोदी ने जब मेक इन इंडिया नारा दिया तो उसके प्रतीक चिन्ह में कलपुर्जी और मशीन से बने सिंह या लॉयन को रखा गया है. सिंह जब गरजता है तो पूरे जंगल में सन्नाटा छा जाता है. भारत रूपी सिंह दहाड़ेगा तो पूरी दुनिया उसकी शक्ति, शौर्य और पराक्रम देखकर सहम जाएगी. हमारी इकोनॉमी और जीडीपी लगातार बढ़ रही है, हमारे शहरों में समृद्धि देखी जा रही है. भारतीयों की प्रतिभा व हुनर अद्वितीय है. यदि अंग्रेजों ने भारत पर राज किया था तो भारतीय मूल के ऋषि सुनक ने भी कुछ वर्षों तक ब्रिटेन का पीएम बनकर अंग्रेजों पर हुकूमत की थी.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11980 - डॉ. सागर खादीवाला

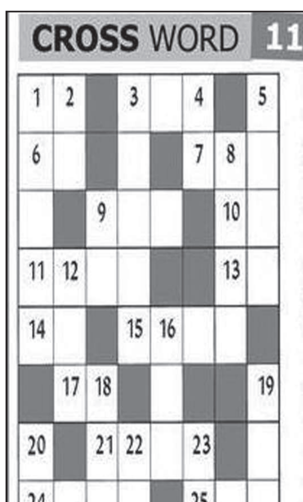

बाएं से दाएं

1. ज्यादती, अधिकता, सीमोल्लंघन (सं.) 3. बेकार घूमने वाला, जो व्यर्थ भटकता रहे 6. धन-संपत्ति, जादू, इंद्रजाल 7. श्मशान 9. श्रीकृष्ण की बहन तथा अर्जुन की पत्नी का नाम 10. जिस समय, जब, जहां (सं.) 11. जिसने सांसारिक सुखों के प्रति अनुराग या आसक्ति छोड़ दी हो 13. वाणी, वाकशक्ति 14. मृत्यु के देवता, जुड़वा बच्चों का जोड़ा, निग्रह 15. ब्रम्ह आत्मा और सृष्टि आदि के संबंध का यथार्थ ज्ञान 17. किसी पदार्थ का सार भाग, सत्य 21. अपेक्षाकृत ठीक या अच्छा (उर्दू) 24. वह स्थान जहां विचार होने तक अभियुक्त को पहरे में रखा जाता है 25. भगवान, शिव

ऊपर से नीचे

1. जो मानवता या इंसानियत के प्रतिकूल हो 2. तिक्की (ताश), स्त्री 3. आदर सत्कार 4. राजा दशरथ के बड़े पुत्र 5. ऊंचे कुल का, पैतृक 8. मकान के आगे धूप से बचने के लिए टीन आदि का छाजन 9. मद्य, मदिरा 12. अंधकार, पाप (सं.) 16. तीव्र गति वाला, शीघ्रता से 18. अस्तबल 19. उपकरण समूह, कारीगरों के यंत्र 20. इच्छा, अभिलाषा 22. मारा हुआ, ताड़ित (सं.) 23. मथानी, दही मथने की लकड़ी

Solution 11979

नि	रा	शा	वा	द		अ	च्छा
दा	नी		ता	क	झा	क	
न		च	य	न		थ	र
	सु	म	न		सु	नी	ति
च	र	क		स	रा	य	
ह		ना	र	द			बि
क	मी		म	न	मो	ह	न
ना	रा	य	ण		ची	र	ना

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में धार्मिक कार्यों में रूचि बढेंगी, यात्रा में बैचारिक वाद विवाद होगा, वर्ष के मध्य में मित्रों तथा प्रियजनों भाईयों का सहयोग, अचल संपत्ति के कार्यो में सफ्लता मिलेगी, दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी, कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, कर्मचारियों का सहयोग बना रहेगा, वर्ष के अन्त में पारिवारिक समस्याओं में व्यस्तता रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों और मित्रों का कार्यो में सहयोग बना रहेगा, अचल संपत्ति से लाभ होगा, दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा में सावधानी रखकर कार्य करना हितकर रहेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट रह सकता है, सिंह राशि के व्यक्तियों को सफ्लता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अच्छा स्थान पद प्राप्त होगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में परिश्रम बढेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिये बालक संकोची, एकांतप्रिय, परोपकारी तथा मधुरभाषी होगा. शिक्षा उत्तम रहेगी. नौकरी में सफ्लता प्राप्त करेगा. जन्म स्थानसे दूर अपना भाग्योदय करेगा. आय के एक से अधिक साधान रहेंगे. माता पिता का भक्त होगा.

मेष- व्यापारिक लेन-देन में सावधानी बरतें, धोखा हो सकता है. झूठ बोलकर मुश्किल में पड़ सकते हैं. पारिवारिक सामंजस्य बना रहेगा. मित्रता लाभदायक सिद्ध होगी.

वृषभ- आत्मविश्वास की कमी से महत्वपूर्ण निर्णय लंबित होंगे. दूसरों की बातों में आकर अपनों को नाराज कर लेंगे. कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी.

मिथुन- अटके काम दोस्तों की मदद से पूरे होंगे. निर्माण संबंधी कार्यों में प्रगति होगी. संतान संबंधी शुभ समाचार मिलेगा. कामकाज पूर्ण होने का योग प्रबल है.

कर्क- समय के साथ कार्यशैली में बदलाव करें. दूसरों पर निर्भर रहने के बजाय अपना काम स्वयं करें. साहस एवं पुरूषार्थ की वृद्धि होगी.

सिंह- मन की बात करीबी से कह देने से तनाव कम होगा. दूसरों के मामले में हस्तक्षेप से बचें. प्रिय अतिथि का आगमन होगा. समस्याओं का समाधान होगा.

कन्या- पुरानी गलती उजागर होने से नीचा देखना पड़ेगा. विरोधियों से सावधान रहें. मनोरंजन, भ्रमण, आमोद प्रमोद के साधानों की पूर्ति होगी. लाभ होगा.

तुला- समय पर काम पूरा नहीं होने से अधिकारियों की नाराजगी झेलनी पड़ेगी. मानसिक संतुलन बना रहेगा. लाभदायक अवसर प्राप्त होने का योग है.

वृश्चिक- अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी. मामूली बातों को तूल देने से रिश्तों में दरार पड़ सकती है. शारीरिक पीडा हो सकती है. परिश्रम रहेगा.

धनु- भाग्योदय के अवसर मिलेंगे. पुराने मामले सुलझेंगें. धार्मिक कार्यों की रूपरेखा बनेगी. आजीविका प्रयासों में सफ्लता मिलेगी. राजकीय सहयोग प्राप्त होगा.

मकर- व्यापारिक साझेदारी लाभदायी रहेगी. घरेलू जरूरतें पूरी करने के लिये कर्ज लेना पड़ सकता है. सुख सुविधाओं की पूर्ति होगी. संपर्क सूत्र बढेंगे. यश मिलेगा.

कुम्भ- वाणीं पर नियंत्रण रखें. अधिकारी काम की आलोचना करेंगे. परिणय चर्चाओं में सफ्लता के आसार हैं. श्रम से अधिक कार्य करना पड़ेगा. पराक्रम बना रहेगा.

मीन- यात्रा स्थगित करनी पड़ेगी. सबकी सलाह से आगे बढ़ना लाभदायी रहेगा. व्यापार व्यवसाय लाभदायक रहेगा. विवादों को टालना हितकर रहेगा. श्रम अधिक रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

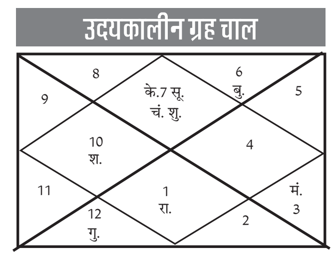

पंचांग

रा.मि. 10 संवत् 2082 श्रावण शुक्ल अष्टमीं भृगुवासरे दिन-रात, स्वाती नक्षत्रे रात 3/36, साध्य योगे प्रात: 5/46, विष्टि करणे सू.उ. 5/24 सू.अ. 6/36, चन्द्रचार तुला, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल अष्टमीं को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, तिल, उड़द के भावों में मंदी होगी. सरसों, अरंडी, वनस्पति, घी, गुड, शक्कर के भाव में घटाबढ़ी रहेगी. जीरा, धनियां, लालमिर्च के भाव में समता रहेगी. वायदा विचार आज 11 बजकर 10 मिनिट के रूख पर व्यापार कर लाभ उठायें. भाग्यांक 7163 है.

SUDOKU 7112

			2				3	
		9		8		2	6	4
1				3	6		9	
4		3						
	8			2			1	
						8		6
	4		7	5				3
3	7	5		4		1		
	2				8			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7111

8	4	5	6	1	3	7	2	9
7	2	6	4	9	5	3	8	1
9	3	1	7	8	2	6	5	4
1	7	2	9	6	8	4	3	5
5	6	9	3	2	4	1	7	8
4	8	3	5	7	1	9	6	2
2	9	7	1	5	6	8	4	3
3	1	8	2	4	7	5	9	6
6	5	4	8	3	9	2	1	7